शांतिदूतों का संगमन

डॉ सुरेन्द्र पाठक

आज चहुंओर वैश्वीकरण की बात हो रही है। वैश्वीकरण यानी वसुधैव कुटुम्बकम्। सही मायने में देखा जाए तो यह भारतीय संस्कृति का मूलांग है लेकिन विडंबना है कि वैश्वीकरण की सोच के साथ चलने के बावजूद हम तमाम हदों में बंधे हुए हैं। स्वार्थ के चलते हमने अपने चारों ओर इतनी सीमाएं खड़ी कर ली हैं कि मानव मानव का बैरी बन गया है। समाज में शांति और समरसता का पतन हो चला है। नतीजन मानव पूरी तरह अमानवीय हरकतें करने लगा है। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर दुनियाभर के मानववादी दृष्टिकोण रखने वाले शांति दूतों ने दिल्ली के राजघाट स्थित गांधी दर्शन सभागार में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया। प्रस्तुत है एक रपट-

समाज में आज जगह-जगह तनाव व अशांति देखने को मिल रही है। लोगों की समझ में नहीं आ रहा है कि आखिर लोग इस तनाव से कैसे निकलें? हमारी नई पीढ़ी इस तनाव से कैसे बचे? समाज को शिक्षित करने वाले शिक्षक भी तनाव में हैं। नई पीढ़ी को कैसे शिक्षित किया जाए, जिससे वह तनाव एवं अशांति से दुनिया को बचा सके। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए गांधी विद्या मंदिर, सरदार शहर राजस्थान की अंगीभूत इकाई आईएएसई मान्य विश्वविद्यालय ने शांति एवं सद्भावना के लिए शिक्षक शिक्षा विषय को लेकर दिल्ली के गांधी दर्शन सभागार में एक सेमिनार का आयोजन किया जिसमें देश-विदेश के बहुत से विद्वानों ने भाग लिया। इस अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में विद्वानों ने उन सभी बिंदुओं पर विचार किया, जिससे समाज में तनाव एवं अशांति पैदा होती है। समाज में शांति एवं सौहार्द के लिए सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि ऐसे शिक्षक तैयार किए जाएं जो इस काम को आगे बढ़ा सकें। क्योंकि शिक्षक ही नई पीढ़ी का भविष्य सजाने एवं संवारने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। यदि हमारी नई पीढ़ी में मूल्यों पर आधारित शिक्षा का विकास हो तो शांति एवं सौहार्द निश्चित रूप से समाज में व्याप्त होगा। आज हमें अपनी शिक्षा में ऐसे विषय शामिल करने होंगे जो समाज को नई दिशा दे सकें। आज यह समस्या सिर्फ भारत की ही नहीं बल्कि विश्व स्तर की है। सभी जगह ऐसा देखने को मिल रहा है। धर्म के बारे में कहा जाता है कि वह समाज को शांति और सौहार्द के मामले में रास्ता दिखा सकता है, मगर धर्म भी उस काम को करने में सक्षम नहीं हो रहा है। विभिन्न धर्मों में अनपे को श्रेष्ठ साबित करने के मामले में बहुत टकराव है। पश्चिम में तो यह संघर्ष बहुत व्यापक स्तर पर देखने को मिल रहा है।

आज समाज में दो बहुत बड़ी समस्याएं देखने को मिल रही है। पहली समस्या तो यह है कि समाज जाति एवं धर्म के आधार पर विभाजित होता जा रहा है। अब तो वह गोत्रों तक विभाजित हो रहा है। दूसरी समस्या यह है कि समाज में मानवीय मूल्यों का क्षरण होता जा रहा है। बिना मूल्यों के कोई भी समाज कैसे विकास कर सकता है और उसमें शांति और सौहार्द कैसे स्थापित हो

त्रिदिवसीय सेमिनार का उद्घाटन करती कमला सिंघवी एवं कनकमल डूगर

सकती है? समाज में ऐसी मानसिकता पैदा करने की आवश्यकता है, जिससे धर्म एवं जाति के आधार पर लोग उद्वेलित न हों। जाति एवं धर्म समाज में अशांति एवं तनाव का कारण न बनें। इसके लिए जब तक समाज में शांति दूतों का विकास नहीं होगा यानी कि शांति दूत नहीं तैयार होंगे, तब तक यह सब चलता रहेगा। शांति दूत की भूमिका यदि सबसे अधिक कोई निभा सकता है तो वे शिक्षक ही हैं। इसलिए आज ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जो नई पीढ़ी में शांति एवं सौहार्द की भावना भर सकें। आईएएसई मान्य विश्वविद्यालय इन्हीं शांति दूतों के निर्माण में लगा है।

वैश्विक स्तर पर देखा जाए तो शिक्षा पूर्ण रूप से प्रोफेशनल हो गई है।

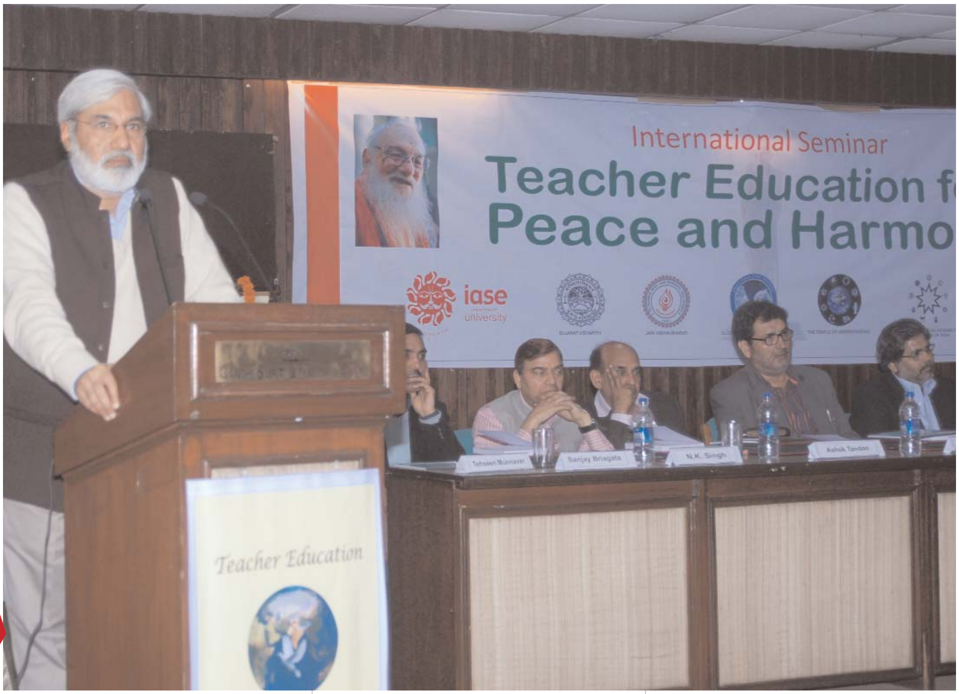

शांति और सद्भाव स्थापित करने में मीडिया की भूमिका पर उद्बोधन देते राहुल देव

शिक्षक शिक्षा इसलिए दे रहे हैं क्योंकि उन्हें उसके बदले वेतन मिल रहा है अन्यथा वे कोई दूसरा और काम करते। दरअसल समाज में परिवार, पड़ोस, गांव एवं अन्य सभी प्रकार की संस्थाओं के

जो सामाजिक दायित्व होते थे, लोग आज उससे कट गए हैं। कोई किसी की परवाह नहीं कर रहा है। जब तक सभी लोग अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह नहीं करेंगे तब तक राष्ट्र एवं समाज का निर्माण कैसे संभव हो सकता है? आज व्यक्ति अपने आप में इतना केंद्रित हो गया है कि उसे दूसरों के दुख-दर्द से वास्ता कम रह गया है। लोगों की जीवन शैली प्राकृतिक नियमों के अनुकूल न होकर अपने नियमों के मुताबिक हो गई है। इसीलिए प्राकृतिक आपदाएं आज आम घटनाओं के रूप में हो गई हैं।

प्रकृति का अत्यधिक दोहन एवं प्राकृतिक नियमों से छेड़छाड़ के कारण पर्यावरण प्रभावित हो रहा है। यदि प्रकृति अपने नियमों के मुताबिक चलती रहेगी तो समाज को उसका लाभ मिलेगा। व्यक्ति प्रकृति से जितना दूर भागेगा, उसके समक्ष समस्याएं उतनी ही अधिक आएंगी। यानी कि समाज में यदि चक्रीयता बनी रहेगी तो प्राकृतिक संतुलन भी बना रहेगा। कुल मिलाकर स्थिति यही बनती है कि समाज में नए सिरे से ऐसे शिक्षक तैयार हों, जो शांति स्थापना का काम कर सकें। बच्चों को ऐसी शिक्षा दें जो अपनी जड़ों से कटे नहीं, अपने मूल्यों की रक्षा के लिए

कनकमल डूगर का मानना है कि किसी भी कार्य को सफल करने में शिक्षकों की अहम भूमिका होती है। हालांकि वह परिवार को शिशु की प्राथमिक पाठशाला मानते हैं लेकिन उनका कहना है कि अगर बच्चे के पालन-पोषण में कोई कमी रह जाती है तो शिक्षक उसे संवार सकता है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि जो भी संस्था शिक्षक तैयार करे वह सह-अस्तित्व की शिक्षा अवश्य दे कि आखिर कैसे मिल जुल कर रहना चाहिए।

अडिग हों, अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करें, प्रकृति के करीब रहें। यदि ऐसा हो पाया तो समाज में शांति एवं सौहार्द का भाव निश्चित रूप से पैदा होगा। यही समाज के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

शांति और सौहार्द के लिए सिर्फ हमारे देश में ही नहीं प्रयास हो रहे हैं बल्कि यह एक विश्वव्यापी समस्या है। भौतिकतावाद के लोग दीवाने हो गए हैं। जीवन में अर्थ ही सबसे प्रमुख हो गया है। जीवन के लिए अर्थ जरूरी है यह बात सत्य है मगर अब इस भाव के बजाय अर्थ ही जीवन के लिए सब कुछ हो गया है। हमारी शिक्षा पद्धति में सबसे बड़ी कमी यह रह गई कि बिना मानवता की शिक्षा दिए तकनीकी ज्ञान दे दिया गया। व्यक्ति पहले मानवता का ज्ञान सीखता, मूल्यों के बारे में जानता। उसके बाद तकनीकी ज्ञान की शिक्षा लेता, तब उसका मकसद पूरा होता। इसके अलावा एक गलती और रह गई कि हमने जो कुछ किया, अपने विकास के लिए किया। शांति और सौहार्द के लिए तमाम नई-नई पद्धतियां ढूंढ़ी गईं, मगर उससे स्थायी शांति नहीं मिल सकी बल्कि उसका रूप और भी विकृत होता गया। लोग सब कुछ अपनी सुविधा के मुताबिक

इंडिया न्यूज 18 से 24 फरवरी, 2012

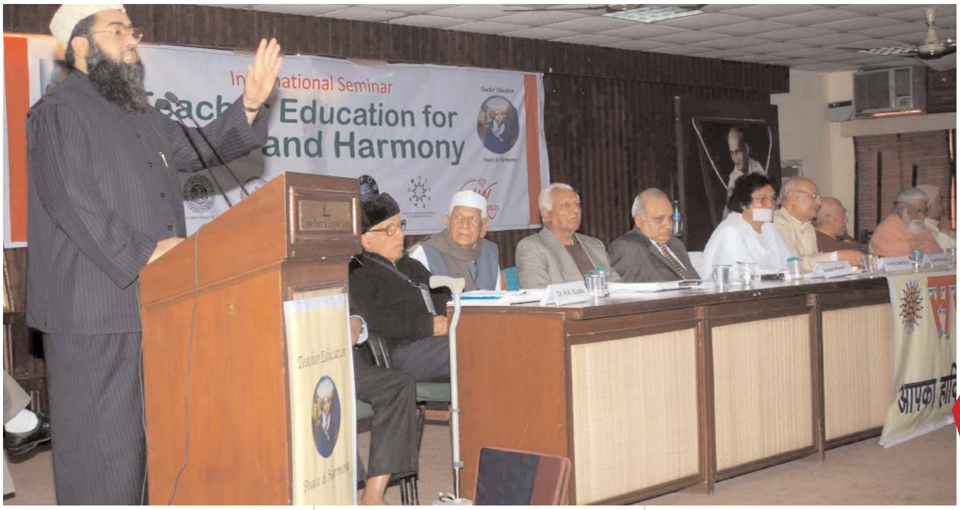

सेमिनार में हर धर्म और संप्रदाय के लोगों ने विचार प्रस्तुत किए

करते गए, प्रकृति का बेतहाशा दोहन करते गए। जब कभी आवश्यकता पड़ी जरूरत के मुताबिक समझौता कर लिया। उदाहरण के तौर पर व्यक्ति पहले जंगलों में रहता था, धीरे-धीरे उसमें ज्ञान का विकास हुआ। अराजकता न फैले, इसलिए शादी नाम की संस्था को अंगीकार किया। शादी के बाद लोग अपनी पत्नी के साथ ही रहेंगे। यही समझ कर यह सब किया गया। इसी प्रकार व्यक्ति ने अपनी जरूरत के मुताबिक तमाम तरह के समझौते किए। शादी की व्यवस्था बनी मगर बलात्कार बंद नहीं हुए। व्यक्ति ने मिलजुल कर रहने के लिए मानव संघ बनाया, मगर झगड़े बंद नहीं हुए। शांति का संदेश देने के लिए धर्म को माध्यम बनाया, मगर शांति नहीं मिली, आखिर इन सबका क्या कारण है? जिनके जिम्मे धर्म के प्रचार-प्रसार की व्यवस्था थी, उन्होंने जागीरों की तरह धर्म चलाया। सभी धर्मों ने अपने आपको सबसे अधिक महत्वपूर्ण मान लिया। अपनी विचारधारा को समाज में स्थापित करने के लिए शक्ति का प्रयोग होने लगा। भौतिक विकास तो बहुत हो गया, प्रकृति के साथ अन्याय बहुत हुआ। आखिर समाज में शांति एवं सौहार्द का वातावरण कैसे उत्पन्न हो, लोग सिर्फ भौतिक विकास की ही तरफ न भागें। विचार होने लगा कि आखिर इससे बाहर निकलने का उपाय ही क्या है? समाज में शांति एवं सद्भाव कायम करने के लिए गांधी विद्या मंदिर, सरदार शहर राजस्थान की अंगीभूत इकाई आईएएसई मान्य विश्वविद्यालय ने एक प्रयास शुरू किया है। इस प्रयास के अंदर योजना यह है कि समाज में ऐसे शिक्षकों का निर्माण हो, जो देश की युवा पीढ़ी एवं बच्चों को ऐसी शिक्षा दें जिससे समाज में शांति एवं सौहार्द का माहौल कायम हो। इसके लिए दिल्ली के गांधी दर्शन सभागार में एक अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस आयोजन में उन बिंदुओं पर विचार किया गया जिससे समाज में अशांति एवं तनाव पैदा होता है।

यूं तो वैश्विक स्तर पर शांति और समरसता स्थापित करना बेहद मुश्किल है। फिर भी इसे असंभव नहीं माना जा सकता। दिल्ली स्थित राजघाट पर 11 से 13 फरवरी तक हुए सेमिनार के जरिए इस असंभव कार्य को संभव बनाने की दिशा में एक सार्थक कदम उठाया गया है। दुनिया भर के शांति दूतों ने आकर इस पर अपनी राय व्यक्त की हालांकि यह कार्य मुश्किल इसलिए है कि दुनिया में तमाम देश हैं, अनेक भाषाएं हैं, अलग-अलग संस्कृतियां हैं। इन सबकी अपनी-अपनी सीमाएं हैं। एक क्षेत्र जब दूसरे की सीमा में प्रवेश करता है तो उसमें 'मैं' प्रवेश कर जाता है। इन क्षणों में वह भूल जाता है कि पहले वह मानव है, फिर कुछ अन्य। यह 'मैं' की बोली उसे सीमाओं में बांध देती है। एक बार जब व्यक्ति 'मैं' के बंधन में बंध जाता है और दूसरे की सीमा में प्रवेश करता है तो दोनों के 'मैं' का टकराव शुरू हो जाता है। यही टकराव उसे एक दूसरे का बैरी बना देती है। भारतीय संस्कृति में 'वसुधैव कुटुम्बकम' की संकल्पना तो की गई है, लेकिन यह सिर्फ किताबी बनकर रह गई हैं। आज देश के पांच राज्यों में चुनाव की प्रक्रिया चल रही है। इनमें से किसी भी राज्य को ले लीजिए।

राजनीतिक दलों ने समाज को इतने टुकड़ों में बांट दिए हैं कि उनमें आपसी टकराव होना लाजिमी है। दरअसल इस तरह के टकराव से बचने के लिए जरूरी है कि मानववादी सोच अपनाई जाए। हर व्यक्ति अगर अपने को मानव बना ले तो शायद टकराव स्वतः ही खत्म हो जाएगा। अब सवाल उठता है कि हर व्यक्ति के भीतर मानववादी सोच का विकास कैसे हो? इसके लिए हमें सही शिक्षण की जरूरत है। बच्चे की प्राथमिक पाठशाला उसका परिवार है। इसलिए जरूरी है कि मां-बाप या घर परिवार के बड़े बुजुर्ग बच्चों को ऐसी शिक्षा न दें जिससे किसी धर्म विशेष या संप्रदाय के प्रति बैर भावना उत्पन्न हो।

दुनिया का कोई भी धर्म हो, वह अधर्म की शिक्षा कभी नहीं दे सकता। अतः धार्मिक ग्रंथों के प्रसंगों को अपनी तरह से तोड़-मरोड़कर व्याख्या करना कदाचित उचित नहीं है। इन प्रसंगों को हमेशा मानववादी दृष्टिकोण से देखना चाहिए। इसी तरह स्कूल में प्रवेश करने वाले बच्चों के साथ अध्यापकों को भी करना चाहिए। ये अध्यापक तभी बच्चों को मानव बना पाएंगे, जब वे खुद पूरी तरह दीक्षित होंगे। इसके लिए जरूरी है कि जो भी संस्था अध्यापक या प्राध्यापक तैयार कर रही है, उन्हें प्रशिक्षण के दौरान धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, भौगोलिक एवं सामाजिक विज्ञान की भी शिक्षा दी जाए ताकि वे समझ सकें कि विभिन्न संस्कृतियों को जन्म देने वाले इन धाराओं के मूल में क्या है? निश्चित रूप से मूल में मानव बनने की बात कही गई है। इस संदर्भ में अकसर लोग यह सवाल करते हैं कि क्या वैश्विक स्तर पर मानववादी सोच का विकास हो पाएगा, इस बारे में विद्वत्जनों का यही कहना है कि हर व्यक्ति शांति से जीना चाहता है लेकिन अभी तक किसी ने इसके लिए सर्वमान्य रास्ता नहीं सुझाया। अगर किसी शांति और समरसता के लिए सिद्धांत प्रतिपादित हुए हैं तो वे शांति कम टकराव ज्यादा पैदा करते हैं। हजारों साल तक भारत विश्व का शांति दूत रहा लेकिन मानव में जैसे जैसे कुप्रवृत्तियां प्रवेश करने लगीं, हिंदुस्तान में भी शांति का पतन हो गया। आज स्थिति बेहद शोचनीय है। समाज में स्वार्थसिद्धि के चलते लोगों की शांति छिन चुकी है। आम आदमी भयाक्रांत है। वह अविश्वास में जी रहा है। ऐसे में शांति और समरसता कैसे स्थापित हो पाएगी? यह यक्ष प्रश्न